अस्तित्व विहीनों के अस्तित्व की लडाई की अभिव्यक्ति: हिन्दी- मलयालम फिल्मों में किन्नर जीवन का चित्रण

डॉ इन्दू के वी

शोध पत्र सार

समकालीन सन्दर्भ में मानव मन को सबसे अधिक प्रभावित करने वाला एक माध्यम हैं सिनेमा| आजकल सिनेमा का अध्ययन एक प्रमुख विधा के रूप में हो रहा है | समकालीन समाज में सबसे अधिक चर्चित समस्याकिन्नर समाज की हैं| अनुकूल नियमों के माध्यम से आजकल उन्हें अधिक से अधिक मान देने की कोशिशें चल रही है| उनकी समस्याओं के निवारण के लिए किसी तात्कालिक या भाववादी हल से आगे नहीं बढ़ सकते | सिनेमा में किन्नर लोगों का चित्रण ज्यादात्तर व्यंग्यात्मक ढंग से किया जाता है| लेकिन आजकल इन लोगों की वेदना , व्यक्तित्व और आत्मविश्वास पर भी सिनेमाओं का निर्माण हो रहा है| किन्नरों की समस्याओं के सभी पक्षों को सच्चाई के साथ उजागर करने का प्रयास समकालीन साहित्यकारों ने भी किया हैं | हिन्दी और मलयालम से चुनी हुईदोफिल्मों के आधार पर वर्तमान परिस्थितियों में समकालीन सिनेमा में किसप्रकार किन्नरों का चित्रण किया गया है, इसपर इस शोध पत्रमें अध्ययन किया गया है|

मूल शब्द –किन्नरसमाज,सिनेमा, समस्या

सिनेमा ही क्यों ?

आज जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जिस पर फिल्मी प्रभाव न हो। पहले केवल पौराणिक और धार्मिक विषयों पर फिल्में बनती थीं। आज कोई भी विषय फिल्मों से अछूता नहीं है। जीवन के हर पहलू पर फिल्में बन रही हैं। बड़ा परदा मनोरंजन का सबसे सस्ता व सुलभ साधन है। मनोरंजन के अतिरिक्त भी फिल्मों के अपने फायदे हैं| फिल्मों के सदुपयोग द्वारा शिक्षा प्रसार तथा समाज सुधार के कार्यों में बहुत अधिक सफलता प्राप्त की जा चुकी है। फिल्मों के माध्यम से देश विदेश का ज्ञान एवं इतिहास, सभ्यता व संस्कृति की जानकारी बड़ी आसानी से हो जाती है। लेकिन सिनेमा को

ज़्यादातर लोग मनोरंजन का साधन ही मानते हैं| हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार और पटकथाकार राही मासूम रज़ा ने कहा है कि "सिनेमा के संबंध में हमारे बुद्धिजीवियों का बहुत दिलचस्प रवैया है | वे फ़िल्में देखते तो है लेकिन उनपर गंभीर चर्चा नहीं करना चाहते |"[1] फिल्मों का स्तर बढाने के लिए उन पर गंभीर चर्चा की आवश्यकता है | सिनेमा अपने दर्शक को कभी नज़र अंदाज़ नहीं कर सकता | आम आदमी का साहित्य से उतना संबंध नहीं है जितना फिल्म का है | राही मासूम रज़ा के अनुसार "सिनेमा उन लोगों तक भी पहुँच जाता है जो लिखना नहीं जानते | भारत जैसे अशिक्षित देश में सिनेमा की कला के महत्व को अनदेखा नहीं कर सकते| भारत के 96% आबादी के लिए छपा हुआ या लिखा हुआ शब्द अर्थहीन है | लेकिन वही शब्द अगर सुना जाये तो उसकी पहुँच बढ़ जाती है | पूरे भारत में हिन्दी फिल्मों की प्रसिद्धि इस बात का प्रमाण है | सिनेमा की पहुँच छपे हुए शब्दों से अधिक है|"[2] आजकल विभिन्न विमर्शों पर चर्चाएँ ज़ारी हैं जिनसे साहित्य के समान फिल्म भी अछूता नहीं है, किन्नर विमर्श से संबंधित अनेक फिल्म सभी भारतीय भाषाओं में आ चुके हैं|

किन्नर यातृतीयलिंगी/उभयलिंगी विमर्श

"कैसा दर्द है, स्वीकृत होकर भी, अस्वीकृत है,

सभ्य समाज से वे आज भी बहिष्कृत हैं,

लेकिन बिना उनके प्रदर्शन के सभी खुशी अधूरी है,

शादी, विवाह, गृहप्रवेश पर जिनसे ही जमता रंग है,

कोई और नहीं हैं वो, दिखते तो हमीं जैसे,

किन्तु फिर भी तृतीय लिंग है, तृतीय लिंग है|"[3]

आजकल तृतीयलिंगी विमर्श पर जोर से चर्चाएँ हो रही हैं | अनेक आलोचकों ने तृतीयलिंगी की परिभाषा अपने अपने हिसाब से बनाई है |उर्मिला पोडवाल के अनुसार "ऐसे मानव किन्नर समाज कहलाते है जो लैंगिक रूप से न नर होते है न मादा | आमतौर पर न पुरुष और न ही महिला , ये एक तीसरे लिंग के रूप में पहचान जाते हैं |"[4]इसलिए किन्नर को तृतीय लिंगी भी कहा जाता है | लेकिन इनको किसी जेंडर पर आधारित न मानकर मानवतावाद से जोड़ना अधिक समीचीन लग ता हैं | संस्कृत में किन्नरों को 'किंपुरुष' कहा जाता है | पौराणिक काल से ही किन्नरों का उल्लेख मिल ता

हैं| महाभारत में शिखंडी हिजड़ा या तृतीय लिंगी है | दिलीप मेहरा के अनुसार "द्रौपदी और धृष्टद्युम्न का भाई शिखन्डी भी एक किन्नर था जिसके कारण अर्जुन भीष्म पितामह का वध कर पाए|"[5]हिजड़ों को पुराने ज़माने से लेकर मंगल कार्यों में आशीर्वाद देने के लिए बुलाये जाते हैं | इस रिवाज के पीछे का कारण बताते हुए डॉ के वनजा कहते है कि "रामायण में पिता के वचन पालनार्थ राम चौदह वर्षों के वनवास के लिए सीता और लक्ष्मण के साथ जब निकलते है तो अयोध्यावासी एक साथ उनका पीछा करता है| जब जंगल में प्रवेश करने लगते है तब राम स्त्रियों , पुरुषों और बच्चों को वापस जाने को कहते है | हिजड़ा लोग वापस लौटते नहीं हैं | 14 वर्षों के बाद वनवास से लौटते समय श्रीराम ने उनसे वहां रुके रहने का कारण पूछा , तब श्रीराम के कथन को किन्नरों ने स्पष्ट किया कि प्रभु आपने नर और नारी को वापस जाने की आज्ञा दी किन्तु हमारे संबंध में कुछ नहीं कहा | इस प्रसंग का उल्लेख रामचरितमानस में देखने को मिलता है:

"जथा जोगु करि विनय प्रनामा बिदा किए सब सानुज रामा|
नारी पुरुष लघु मध्य बड़ेरे, सब सनमानी कृपानिधि फेरे||

कहा जाता है कि हिजड़ों की इस निश्चल एवं निस्वार्थ भक्ति भावना को देखकर श्रीराम ने उन्हें वरदान दिया था, कलियुग में तुम्हारा ही राज होगा और तुम लोग इसको ही आशीर्वाद दोगे उसका अनिष्ट नहीं होगा| रामचरितमानस में उनके संबंध में ओर भी उल्लेख है, जैसे :

पुरुष नपुंसक नारी वा जीव चराचर कोई |
सर्व भाव भज कपत्त तजि मोहि परम प्रिय सोई||

अर्थात चराचर जगत में कोई भी जीव हो चाहे वह स्त्री , पुरुष, नपुंसक, देव, दानव मानव आदि अगर वह सम्पूर्ण कपट को त्यागकर मुझे भजता है वह मुझे प्रिय है|

महाभारत में पांडवों से शिखंडी का रिश्ता गहरा था | जब अभिमन्यु की शादी हुई तब आशीर्वाद देने के लिए शिखंडी वहां आया | रामायण - महाभारत में मंगल कार्यों में भाग लेकर आशीर्वाद देना जब रिवाज़ बन गया तो हमारे समाज ने इसे स्वीकार कर लिया |"[6] इसप्रकार हिजड़ा समूह मंगल कार्यों में भाग लेते है और अनुग्रह देते है|

ट्रांसजेंडर लोग सामाजिक जीवन से तिरस्कृत और निर्मम अत्याचारों के शिकार है | इसलिए वे अपनी जगहों से पलायन कर अपने वर्ग के लोगों के साथ समूह बनाकर जीते हैं|

तृतीय लिंग वैज्ञानिक कारण

हर एक व्यक्ति का दो sex chromosomes होते हैं , एक माता का और एक पिता का|'xycromsomes' से 'पुरुष' और 'xx cromozomes' से स्त्री का जन्म होता है लेकिन hormones के disorder से थर्ड जेंडर का जन्म होता हैं|[7]

जन्म के साथ हम एक जैविक लैंगिक पहचान लेकर पैदा होते हैं। वह जैविक पहचान हमारे जननांग के माध्यम से हमें नर या मादा प्रजाति से जोड़ती है, ये हमारी लैंगिक पहचान ही होती हैं कि हम ये जान पाते हैं कि हम आखिर हैं कौन- नर, मादा या कोई और। "इन दोनों से इतर समाज में जिनका अस्तित्व है वे तीसरे जन वे हैं जिन्हें हम पारंपरिक यौन-पहचानों के तहत समेट नहीं पाते हैं। इन तीसरे जनों का पारंपरिक यौन-पहचान में फिट नहीं हो पाना ही उन्हें अजनबी बना देता है। सिर्फ अजनबी नहीं, बल्कि अवांछित भी" हमारे समाज मे स्थित यह तीसरा लिंग है- किन्नर समुदाय जिसे हमारे समाज में हिजड़ा, ट्रांसजेंडर,छक्का, थर्ड जेंडर इत्यादि नामों से भी जाना जाता है।

फिल्मों मेंट्रांसजेंडरजीवन का चित्रण

प्राचीन काल से लेकर आज तक के अनेक साहित्यिक रचनाओं में किन्नर जीवन का चित्रण मिलता हैं| कुछ फिल्मों भी किन्नर जीवन का चित्रण हैं| ट्रांसजेंडर पर आधारित सिनेमा संख्या में बहुत कम है | कल्पना लाजमी की 'दरमियाँ – इन बिटवीन '(1997), 'सड़क', योगेश भरद्वाज की 'शबनम मौसी '(2008), श्याम बेनेगल की 'वेलकम टू सज्जनपुर '(2009), 'मर्डर २', मलयालम में लोहितदास का 'सूत्रधारन', लाल जोस का 'चान्तुपोट्टू', डॉ संतोष सौपर्निक का 'अर्ध नारीश्वर', बिजु वर्मा का 'ओडूम राजा आडूम राणी ', 'न्जान मेरिक्कुट्टी ' आदि फिल्में ट्रांसजेंडरों के जीवन पर आधारित हैं | आगे चुने हुए हिन्दी और मलयालम फिल्मों में अभिव्यक्त तृतीय लिंगी विमर्श पर चर्चा करेंगे|

शोध पत्र की क्रियाविधि

प्रस्तुत शोध पत्र की क्रियाविधि **(Methodoloy)**दो अलग संस्कृति के दो फिल्मों का तुलनात्मक अध्ययन है| मैं ने इस शोध पत्र में उत्तर भारत की किन्नर समस्या पर बनी हिन्दी फिल्म 'शबनम मौसी ' व दक्षिण भारत की मलयालम भाषा में बनी किन्नर फिल्म न्जान मेरिक्कुट्टी का

तुलनात्मक अध्ययन किया| दोनों फिल्मों के मुख्य पात्रों के जीवन संघर्ष व चुनौतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया है|

शबनम मौसी और न्जान मेरिकुटी ,ये दोनों फिल्मों की अपनी विशेषता है | दोनों फिल्म वास्तविक कहानी पर आधारित है | दोनों में ऐसे दो ट्रांस वीमेन का चित्रण किया है जो कभी ताली पीटती नहीं हैं, दुआ देती फिरती नहीं हैं, अनूठे व्यकित्ववालीदो स्त्रियाँ| वे पहले पुरुष थे बाद में स्त्री बन गयी| पुरुष और स्त्री के गुण इनमें सम्मिलित हैं जो अर्धनारीश्वर की कल्पना को साकार बना दिया हैं|

शबनम मौसी

शबनम नामक ट्रांसजेंडर की वास्तविक कहानी पर आधारित फिल्महै 'शबनम मौसी'| एक पुलिस अफसर की पत्नी बच्चे को जन्म देती है। हिजड़ा लोग उस बच्चे को आशीर्वाद देने केलिए पहुँच तेहैं । लेकिन उन्हें पता लग जाता कि यह एक हिजड़ा बच्चा है। इसलिए वे उस बच्चे को अपने साथ ले जा ते है । पुलिस अफसर और उनकी पत्नी बच्चे को वापस देने को कह ते है चिल्लाते है| लेकिन वे बेपरवाह होकर बच्चे को लेकर चली जाती हैं | उनकी नेता काली माँ नामक हिजड़े को बच्चे का दायित्व सौपता है | वह बेहद खुशी के साथ बच्चे को स्वीकारता है और शबनम नाम रखता है |

शबनम ईश्वर पर खूब विश्वास करती है | हमेशा वह सोच समझकर बोलती है | वह अपनी माँ से बहुत प्यार करती है | मगर हिजड़ो की स्थिति दयनीय हो जाने के कारण गुरु माँ उन्हें सेक्स वर्क के लिए प्रेरित करती है| काली माँ इससे सहमत नहीं थी इसलिए नेता माँ से अपना विरोध प्रकट करती है | इस बात को लेकर दोनों में झगड़ा हो जाती है | बीच में काली माँ को नेता माँ धक्का देता है| दीवार की एक कील पर सर टकराकर सर फूट जाती है और अचानक उसकी मृत्यु हो जाती है | काली माँ की रोने की आवाज़ सुनकर शबनम वहां पहुँचती है | इस वक्त नेता माँ बाहर जाती है और रोने का बहाना करते हुए सभी लोगों से बताती है कि शबनम ने काली माँ की हत्या की | पुलिस उसे थाने ले जाती है | उसे खूब मारती -पीटती है | बाद में अपनी माँ के दाह संस्कार केलिए शबनम आती है | उसके बाद वह पुलिस से बचकर वहां से चली जाती है | वह मध्यप्रदेश में एक मंदिर में पहुँचती है | उस समय एक लड़की से कुछ गुंडे बलत्कार करने की कोशिश करते है | शबनम उसे उन गुंडों से बचाती है | वह लड़की उसे अपने घर ले जाती है | वहां से पता चलता है कि वहां के अमीर

नेता के बेटे से मीरा प्यार करती है | मगर अमीर नेता नरेंद्र बाबू उसके बेटे की शादी गरीब लड़की के साथ कराने को तैयार नहीं | शबनम की हत्या करने केलिए लल्ला नामक गुंडा को भेजा जाता है | लेकिन शबनम के मन की ताकत के सामने लल्ला हार मानता है | पहले शबनम लल्ला से मार खाती रही लेकिन गाँव का एक भी व्यक्ति उनकी सहायता के लिए आगे आता नहीं है | लल्ला को मारकर मौसी कहती है "लल्ला मैं अब तक इस उम्मीद से मार खा रही थी कि शायद एक हिजड़े को पिटता देखकर इन मर्दों की मर्दानी जाग जाए | लेकिन बेकार है | एक बात होता है लल्ला कि मेरी मौत ऊपर वालों ने तेरे हाथ से नहीं लिखे | जाग क्यों गए तुम लोग? जाओ सो जाओ, तुम्हारी आँखें तो दिन में भी नहीं खुलती और फिर ये तो रात है और रात तो सोने के लिए ही होते है | अपने डर और कायरता को सहनशीलता का नाम देकर पल्ला झाड़नेवालों आज एक हिजड़ा तुम लोगों में अपना अंश देख रहा है . . . मैं अपनी बिरादरी छोड़कर आयी थी यह सोचकर कि तुम जैसे इंसानों के बीच रहूँगी| मगर मुझको क्या पता था कि मेरी किस्मत में हिजड़ों के बीच रहना ही लिखा है | अगर मैं तन से हिजड़ा हूँ तो तुम मन से हिजड़ा हो . . . तन का हिजड़ा फिर भी ताली पीट पीटकर जी लेता है लेकिन मन का हिजड़ा ताली पीटते हुए भी डरता है| एक मरा हुआ मर्द होने से कहीं बहुत अच्छा है एक ज़िन्दा हिजड़ा होना |"[8]गांववाले शबनम को पसंद करते हैं और प्यार के साथ सब उसे शबनम मौसी पुकारते है | धीरे -धीरे शबनम मौसी गांववासियों की प्रिय मौसी बन जाती है | राजनीतिक चुनाव के अवसर पर एक पार्टी के दो नेताओं में मतभेद होने कारण एक को नीचा करने केलिए दूसरे नेता शबनम को चुनाव में लड़ने का अवसर देता हैं | लेकिन बाद में दोनों नेता एक हो जाने पर शबनम से आवेदन पत्र वापस लेने को कहते हैं लेकिन गाँव वासियों के कहने पर वह चुनाव लड़ने का निर्णय लेती है| पूरे गाँववासी एवं उसके दोस्त उसका साथ देता है | कई मुसीबतों को पार कर के शबनम चुनाव जीत जाती है | फिल्म यहां समाप्त होता है |

शबनम मौसी पचीस साल की एक ट्रांसजेंडर है | वह अपनी काली माँ और अन्य ट्रांसजेंडर लोगों के साथ खुशी से ज़िन्दगी बिताती है | वह सबके साथ प्यार एवं शांति के साथ बातें करती है | उसकी माँ उसे अच्छे गुण सिखाती हैं | एक दुकानवाला शबनम से मोहब्बत करता है | मगर उसके बहन को शबनम पसंद नहीं थी इसलिए वह उनको अपने भाई से दूर जाने को कहती है | शबनम वहां से चुप -चाप निकल जाती है | शबनम का एक दोस्त उसे समझाता है कि -"इस समाज ने हमें इसलिए नहीं अपनाया कि हम समाज जैसे नहीं है |"[9]शबनम सबको प्यार की नज़रों से देखती हैं |

लेकिन उसे प्यार कहीं से भी नहीं मिलता है | इसलिए उनपर अपनी माँ की ह्त्या का झूठा इलज़ाम लगा| इतने में भी वह सारी मुसीबतों का सामना करने का प्रयास करती है | जब पुलिस उसे दोषी कहकर खूब मारती है तब भी शबनम रोती नहीं , बल्कि उसे मार -मार के पुलिस की अपना गुस्सा समाप्त करने का आह्वान करती हैं|

अपनी बिरादरी से भागकर दूसरे गांव जाने पर भी शबनम को कई मुसीबतों का सामना करना पड़ता है| लेकिन वहां के गांववासियों के बीच शबनम अपनी सद्प्रवृत्तियों की वजह से अच्छा नाम कमाती है|सब उसके आदेशों का पालन करते है | सब उसे मान -सम्मान देते है| इससे शबनम, शबनम मौसी बनी | वह एक हिजड़ा है, यह वहां के गांववासियों केलिए बुरी बात नहीं, बल्कि वे सब शबनम को अपने में से ही एक व्यक्ति की तरह देखते हैं| इसलिए चुनाव के समय बिना हिचक के सब शबनम से चुनाव में लड़ने की प्रार्थना करते हैं| शबनम उनके खुशी केलिए बड़े नेताओं के खिलाफ चुनाव में लड़ने केलिए राज़ी हुयी |फिल्म के अंत में शबनम मौसी चुनाव जीत जाती है | शबनम एक किन्नर है मगर वह अपना शरीर बेचकर पैसा कमाना नहीं चाहती है | वह काम करने में और दूसरों की मदद करने में विश्वास रखती हैं| इसलिए वह पूरे गांव की मौसी बन सकी|

प्रस्तुत फिल्म में किन्नर जीवन को एक नया दिशा प्रदान किया गया है| उनकी भाषा एवं वेश-भूषा सामान्य लोगों के जैसा दर्शाया है | शबनम की बातें कठोर ह्रदय को भी पिघलाने वाली हैं| इस फिल्म के माध्यम से किन्नर समाज व उनके जीवन की चुनौतियों पर बहस खडी होती है|

न्जान मेरीकुट्टी

किन्नर विमर्श पर आधारित समकालीन मलयालम फिल्मों में सबसे अधिक चर्चित फिल्म है **'न्जान मेरीकुट्टी'**।इसमें मेरीकुट्टी समाज में अपना अस्तित्व ढूँढनेवाले और उसको बनाये रखने के लिए निरंतर प्रयास करनेवाले किन्नर लोगों का प्रतिनिधि है। रंजीत शंकर के निर्देशन में बनायी गयी फिल्म'न्जान मेरीकुट्टी' में मेरीकुट्टी का किरदार मलयालम फिल्म के प्रमुख अभिनेता जयसूर्या निभाता है। मेरीकुट्टी स्वयं अपने व्यक्तिव से प्यार करनेवाली है। दूसरों के मदद से नहीं बल्कि अपने मेहनत से जीविका कमानेवाली व्यक्ति है। मेर्रिकुट्टी का जन्म एक पुरुष के रूप में हुआ था, लेकिन स्त्री हारमोन की अधिकता के कारण वह मानसिक रूप से एक स्त्री थी । उस के कई सपने थे| वह एक पुलिस अधिकारी बनने की ख्वाहिश रखती है। लेकिन उसे एक किन्नर होने के नाते अपने मंज़िल तक पहुँचने

केलिए कई अड़चनों का सामना करना पड़ता है। पर किसी भी कठिन परिस्थिति में मेरीकुट्टी अपने आपको कोसती नहीं है , वह अपने सपनों को छोड़ ती नहीं , अपने बस्ती से भागता भी नहीं , वह हर किसी मुजीबत काडटकर सामना करते हुए आगे बढ़ती है। पूरी फिल्म एक तृतीय लिंगी व्यक्ति के अस्तित्व गढ़न पर बल देती हैं।

कहानी की शुरुआत में मैथ्यूकुट्टी , जो अपने आप को ट्रांसजेंडर नहीं ट्रांससेक्सुअल कहना चाहती है और अपने पुरुष लिंग कोस्त्रीलिंग में बदलने केलिए सर्जरी करवाना चाहती है। एक पुरुष के रूप में जन्म लिए मैथ्यूकुट्टी सर्जरी के बाद मेरीकुट्टी बन जाती है। अपने घर वापस आने पर उसकी परेशानियां शुरू हो जाती हैं। सामान्यतः किन्नर लोगों के जीवन में जो घटित होता है वही मेरीकुट्टी के परिवार में भी होता है । उसका परिवार उसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होता । लेकिन वहां के चर्च में फादर उसे सांत्वना और प्रेरणा देते हैं। उनके एक इंस्पेक्टर बनने के दृढ निश्चय को शक्ति दे ते है। वह परीक्षा की तैयारी केलिए एक कोचिंग सेंटर में जा ती है। लेकिन समाज उसका साथ नहीं देता है| निराशा को आशा में बदलने के लिए फादर उसे चर्च द्वारा संचालित एक चैनल में रेडियो जॉकी का काम देता है। एक रेडियो जोकी के रूप में उनके इलाके में उसे काफी प्रशंसा मिल ती हैं। लेकिन उस इलाके के पुलिस अफसर मेरीकुट्टी को बहुत अधिक तंग करता है। मगर वहअपने यहाँ के कलेक्टर एवं अपने दोस्तों की मदद से अपनी मंज़िल तक पहुँच जाती है। एक पुलिस इंस्पेक्टर बन जाने से मेरिकुट्टी को समाज में हैसियत एवं आदर प्राप्त हो ता है| साथ ही फिल्म बता ती है कि जेंडर जो कुछ भी हो मेरीकुट्टी की तरह जी तोड़ मेहनत करने पर किसी के भी सपने यथार्थ में परिवर्तित हो सकते है|

इस फिल्म में मेरीकुट्टी एक ट्रांसजेंडर स्त्री है। अन्य फिल्मों की तुलना में इस फिल्म में एक ट्रांसजेंडर को अपना अस्तित्व एवं अपनी हैसियत दी है| मेरीकुट्टी अपने सपनों को सच बनाने के लिए हर पल परिश्रम करती है | तृतीय लिंगी होने पर भी वह अपने आपको छिपाते नहीं बल्कि वह सर्जरी के बाद अपने बस्ती लौटती है। "मैं लिंग से पुरुष हूँ पर जेंडर से स्त्री हूँ। ''[10]मेरीकुट्टीइसे लोगों बीच स्थापित करने की कोशिश करती है | मेरीकुट्टी अपने आइडेंटिटी को समाज के सामने खुलकर बताना चाहती है। क्योंकि वह अपने जैसी तृतीय लिंगी लोगों की प्रेरणा बनना चाहती है। जो लोग उनके प्रति घृणा भाव रखती थी वे बाद में उनसे प्रभावित होते है । मेरीकुट्टी अच्छी तरह जानती थी कि उसे सभी से आदर प्राप्त करने के लिए समाज में अपना जगह बनाना ज़रूरी है। इसलिए वह पुलिस बनना

चाहती है। कई मुजीबतों को पार करके फिल्म के अंत में वह पुलिस बन जाती है। मेरीकुट्टी समाज में अपना जगह बना लेती है और जो लोग उनसे मुंह मोडते थे वे सब उसे मान सम्मान देने लगते है।

मैथ्यूकुट्टी जब मेरीकुट्टी के रूप में बदल जाती है तब वह ज़्यादात्तर साड़ी पहनती है| उसके कपडे एकदम सूती और दूसरों को उसके प्रति सम्मान करनेवालेहोते है। वह चेहरे पर ज़्यादा मैकअप नहीं लगाती है। केवल छोटी सी बिंदी लगाती है। बाल कटे हुए है , मगर उसमें वह ख़ूबसूरत दिखती है। प्रस्तुत फिल्म ट्रांसेक्सुअल व्यक्ति को एक आम व्यक्ति के रूप में पेश करती है। इसलिए उसे आम व्यक्ति की तरह सजाया-धजाया गया है।

मेरिक्कुटी एवं शबनम मौसी के चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन

हिन्दी और मलयालम फिल्मों में प्रारंभ काल से ही ट्रांसजेंडर या हिजड़ों का चित्रण मिलता है लेकिन उन लोगों के जीवन का चित्रण विलक्षणता एवं विकलता से किया गया | अधिकांश फिल्मों में परिहास पात्र है तो कुछ फिल्मों में खलनायक के रूप में उनका चित्रण किया गया हैं| लेकिनं 'शबनम मौसी' और 'न्जान मेरिक्कुटी' जैसी फिल्में हमें उम्मीदें प्रदान करने वाली हैं | ये दोनों फिल्में ट्रांस जेंडर लोगों से न्याय करती है|भविष्य में भीऐसी न्यायपूर्ण एवं अपने धर्म को सही ढंग से निभानेवाली फिल्मों का सिनेमा के क्षेत्र में आना अनिवार्य है|

'न्जान मेरिकुटी ' फिल्म में निर्दिष्ट लिंग के शरीर के भीतर अपर लिंग की मानसिक विह्वलताओं का बोझ ढोने को विवश हुए एक व्यक्ति है माथ्युक्कुटी जो बाद में लिंग परिवर्तन की शल्यक्रिया करके मेरिक्कुटी बन जाती है| शबनम को बचपन से ही घर से हिजड़ों द्वारा उठाया जाता हैं| इसलिए परिवार से उन्हें अपमान सहने की आवश्यकता न पडी | लेकिन मेरिकुटी और शबनम दोनों ने अपने चरित्र को और अपने नज़रिए को समाज के सामने साहस के साथ सधैर्य प्रकट किया|

मेरीकुट्टी और शबनम मौसी की शारीरिक भाषा एकदम स्पष्ट एवं सशक्त है। वह सबके साथ सर उठाकर , आँखों में देखकर बात करती है। दोनों अत्यंत धैर्य के साथ अपनी बातों को पेश करती है।मेरीकुट्टी कहती हैं कि स्त्री और पुरुष को समझने की ताकत मुझमें हैं क्योंकि मैंने दोनों जन्म का अनुभव किया हैं| शबनम को तो हिजड़ों की बिरादरी में ही पाला पोसा गया हैं इसलिए समाज

की क्रूर लिंग नीति ने उसे बचपन से तंग नहीं किया , लेकिन मेरिकुटी बचपन से ही इसका शिकार होती है | इसलिए मेरिकुटी का चरित्र शबनम से ज्यादा प्रताड़ित लेकिन ज्यादा मज़बूत लगता है|

मेरीकुट्टी और शबनम दोनों रोती है लेकिन हारती नहीं , कभी -कभी थक जाती है मगर गिरती नहीं। वे अपने आपको संभालने की क्षमता रखती है। शबनम हिन्दू और मेरुकुटी ईसाई धर्म पर विश्वास रखती है |दोनों ईश्वर के प्रति असीम प्रेम और श्रद्धा भाव रखती है। अपने आप पर विश्वास रखकर वह सभी मुजीबतों का सामना करती है। मेरिकुटी का पहले से ही एक लक्ष्य था | वह चेन्नई के एक बड़े कंपनी में अच्छी तनख्वाह में काम कर रहा था |अगर वह चाहती है तो अपने अस्तित्व को समाज से छिपाकर आराम से ज़िंदगी बिता सकती थी | लेकिन उस काम को छोड़कर वह स्त्री बनकर अपने इलाके में वापस आती हैं| मेरिकुटी का एक लक्ष्य था| वह एक पुलिस अधिकारी बनना चाहती थी| शबनम मौसी संयोगवश चुनाव लड़ने का निर्णय करती है लेकिन मेरिकुटी पुलिस अधिकारी बनने के लक्ष्य में ही जीवन को आगे बढ़ाती हैं | फिल्म के अंत में पुलिस अधिकारी बनने के बाद के साक्षात्कार में अपने लक्ष्य की सराहना करती हुयी वह कहती है - "सबसे पहले खुद को यह बताने का साहस होना चाहिए कि मैं कौन हूँ , फिर दूसरों से और फिर पूरी दुनिया से |"मेरिकुटी और शबनम दोनों का लक्ष्य एक ही था कि अपने जैसों को आगे बढ़ाना चाहिए |वे दोनों केवल ट्रांसजेंडर लोगों केलिए ही नहीं बल्कि सभी लोगों के लिए एक रोल मॉडल बन जाते हैं।

न्जान मेरीकुट्टी और शबनम मौसी दोनों फिल्मों की एक ऐसी कहानी है जो लिंग भेद के मापदंडों को तोडती है। किन्नर व्यक्ति के चित्रण के माध्यम से समाज की रुग्ण मानसिकता पर सवाल उठाती है। यह फिल्म जेंडर की दृष्टि से दमित लोगों को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। ज़िंदगी में बार बार पराजय आने पर भी हार न मानकर आगे बढ़ने का आह्वान देती है। वस्तुत : यह फिल्म समाज को नई दिशा दिखाने के साथ लोगों का नजरिया बदलने की कोशिश भी कर ती हैं। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि ट्रांसजेंडर समुदाय की प्रतिबद्धता और समाज की बदली हुई मानसिकता , दोनों द्वारा ही इस समुदाय को मानवीय गरिमा युक्त बनाया जा सकता है| सिनेमा जैसा लोकप्रिय माध्यम इसमें सहयोग दे सकता हैं जिससे वे आगे बढ़ सकें|

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

१. राही मासूम रज़ाकुंवर पाल सिंह , सिनेमा और संस्कृति , भूमिका, पृष्ठ सं -१३, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्र सं-2001

२. राही मासूम रज़ाकुंवर पाल सिंह, सिनेमा और संस्कृति, भूमिका, पृष्ठ सं -18, 19 , वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्र सं-2001

३. तृतीय लिंग, डॉ विष्णुकांत अशोक, अस्तित्व और पहचान, सं. डॉ विजेंद्र प्रताप सिंह, पृष्ट संख्या -15

४. उर्मिला पोडवाल, पर्वती कुमारी - किन्नरसमाज: तीसरी ताली . पृ.सं. ३५ वाणी प्रकाशन , २०१९

५. डॉ दिलीप मेहरा (सं) हिन्दी साहित्य में किन्नर समाज-, पृ.सं. ३१, वाणी प्रकशन, २०१९

६. डॉ के वनजा , क्वीर विमर्श -लेस्बियन, गे, बाई-सेक्सुअल, ट्रांसजेंडर, पृ. सं-१२७, १२८, वाणी प्रकाशन, प्र. सं-२०२१

७. डॉ अनन्या मंडल (MD)Causes of Gender Dysphoria (news-medical.net)

८. योगेश भरध्वाज -शबनम मौसी -2005

९. योगेश भरध्वाज -शबनम मौसी -2005

१०. रंजित शंकर - न्जान मेरिकुट्टी -2018